647510 **BRS3HINF0312** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 3 (*CBCS*) Examination

Oct/Nov - 2024 (As Per Syllabus Year June-2016)

HINDI(FOUNDATION - 5)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न- १ "प्रतिशोध" एकांकी में कवि भारवि के द्वारा आज के युवानों को क्या सीख दी है- कथावस्तु लिखिए । (१५)

अथवा

प्रश्न- १ 'पर्दे के पीछे' एकांकी- कथावस्तु लिखिए ।

प्रश्न- २ "रीढ की हड्डी" सामाजिक विषमता को चित्रित करनेवाला एकांकी है- कथावस्तु लिखकर साबित कीजिए । (१५)

अथवा

प्रश्न- २ 'स्ट्राईक' एकांकी की कथावस्तु लिखकर दाम्पत्य जीवन की विषमता का चित्रण कीजिए ।

प्रश्न- ३ निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के सुचनानुसार उत्तर दीजिए । (१५)

(१) हाँ, मैने बी ए. पास किया है, कोई नहीं किया चोरी नहीं की, आप के लाडले बेटे की रीढ हड्डी हैं या नहीं जाँच कीजिए ।

(२) यह प्रेम का ताप है- जीतना बढता है, सौंदर्य उतना ही- निखरता है, । कविता उतनी ही प्रखर होती है, और उन्माद उतना ही मादक होता है । संदर्भ को समझाईए ।

(३) मनुष्यो के लिए तो सबने अस्पताल खोल ही रखें है । इन बेचारे मूंगे पशु-पक्षियों का क्या ? संदर्भ देकर समझाईए ।

(४) अनुशासन की मर्यादा पर बडे से बडे व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है । संदर्भ देकर समझाईए ।

(५) "और वह जा न सकी" शीर्षक की सार्थकता सिध्ध कीजिए ।

प्रश्न- ४ निम्नांकित प्रश्नों का सूचनानुसार उतर दीजिए । (१५)

(१) "प्रतिशोध" एकांकी मे से श्रीधर की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए ।

अथवा

(२) "रीढ की हड्डी" में से पात्र गोपालप्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए ।

प्रश्न- ५ जैन स्वीट मार्ट को माल में दोष होने का शिकायती पत्र लिखिए । (१०)

अथवा

प्रश्न- ५ निम्नलिखित परिच्छेद का हिंदी-भाषा में ही सारलेखन लिखिए ।

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलोकिक है । उतर दिशामें दूर-दूर तक पर्वत श्रृंखलाएँ फैली हुई है । उनकी गगनचुंम्बी चोटियों पर बादल भंडराते रहते है तथा बर्फ गिरती रहती हैं । विविध मौंसम, गर्मी, शरद, वर्षा एक ही साथ चलते रहते हैं । झरझर झरने प्रवाहित होते रहते हैं । नदियों के उदगम स्त्रोंतो की कलकल ध्वनि गुंजती रहती है । विभिन्न उपयोगी जडी बुतियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध है । उनके जीव-जन्तु इन पर निवास करते है । ऋषि-मुनि वहीं पर एकांत साधना में मग्न रहते है । इधर उधर उगी हुई घास तथा देवदारुण आदि के लम्बे-लम्बे वृक्ष इस प्रदेश में हरीतिमा व्याप्त करते है । प्रात:एवं सायंकाल सूर्य, पर्वत, श्रृंगो पर स्वर्णिम, गुलाबी, लाल, रंग विकीर्ण कर प्रकृति-सुंदर को सजाता है। रात्रि में चंद्रमा अपनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चांदनी से प्रकृति नारी के वन को श्रृंगारित करता है । ओस की बुंदे उसे विविध अलंकार पहनाती है । यह सब देखकर ऐसा लगता है मानो इस रुपमें इश्वर ने अपनी सुरुचि का परिचय दिया है ।

****